अमर चित्र कथा

सोने की मुहरोंवाली थैली

संख्या ६०७

₹१०

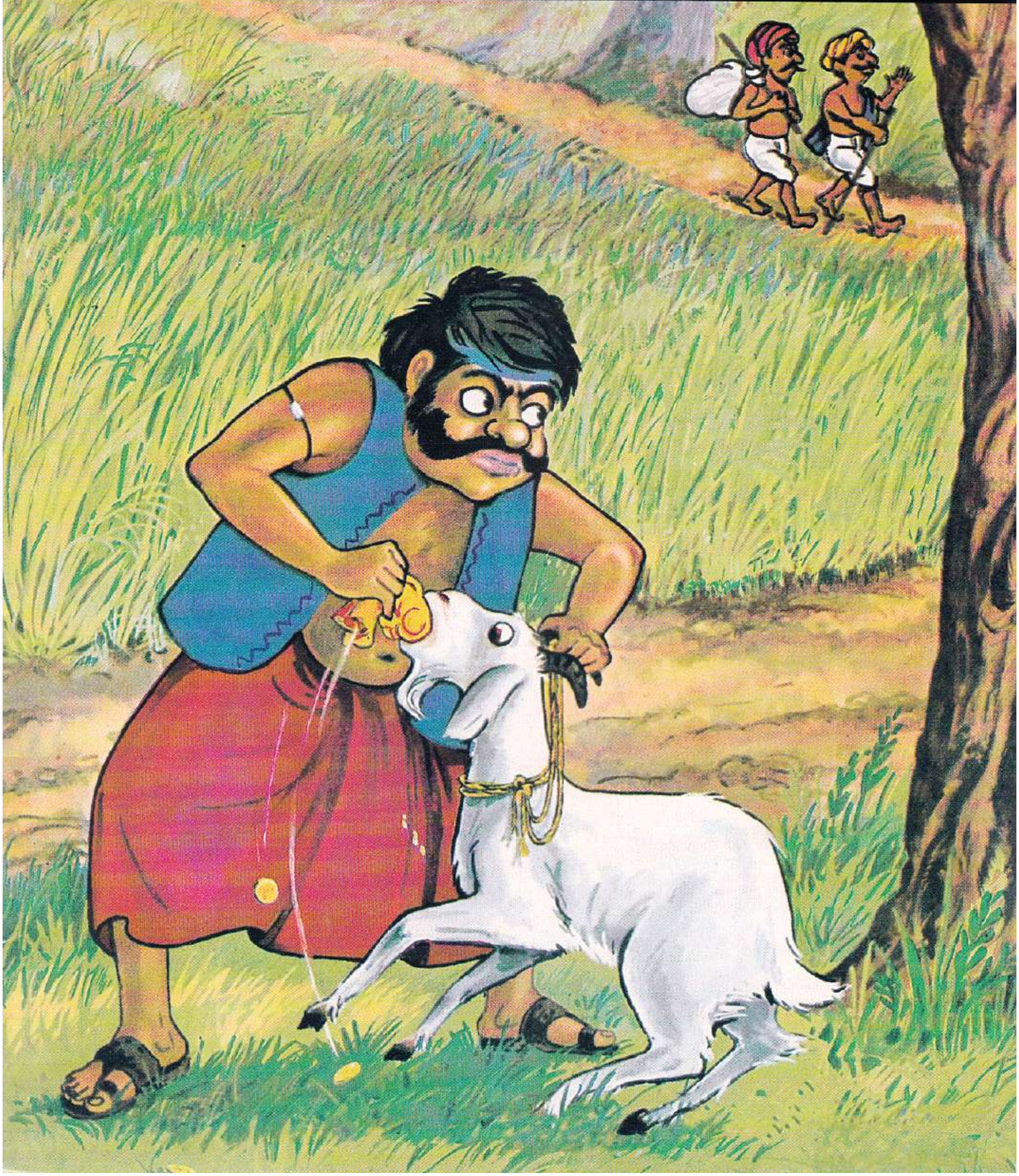

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : **www.ack-media.com.** अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर **www.amarchitrakatha.com** से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिककथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ठ साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास–परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा	**चित्र**	**संपादक**
शांतीदेवी मोतीचंद्रा	वी.बी.हलबे	अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd
© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1977, Reprinted June 2022
ISBN 978-81-8482-366-0
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purch

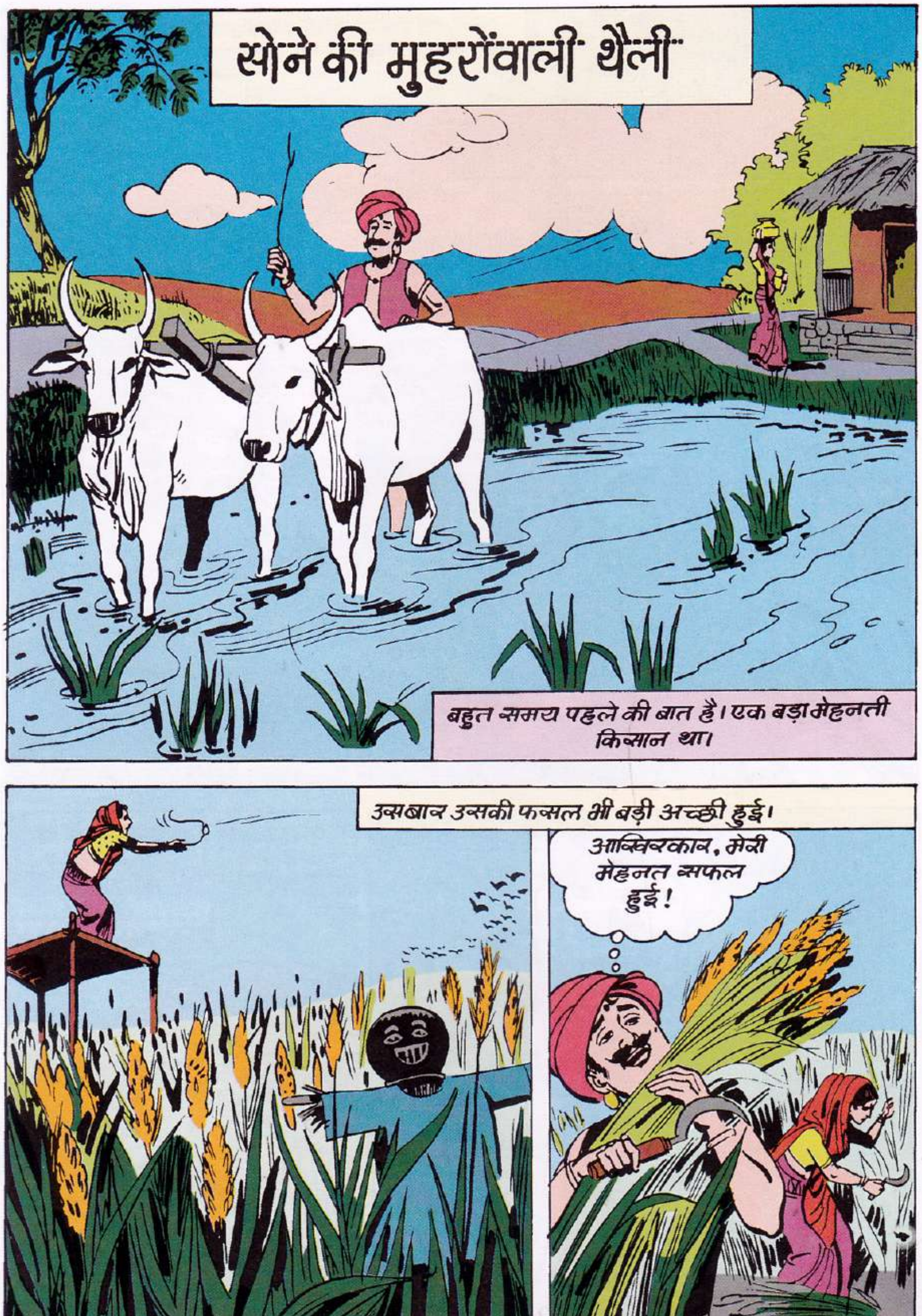
सोने की मुहरोंवाली थैली
बहुत समय पहले की बात है। एक बड़ा मेहनती किसान था।
उसबार उसकी फसल भी बड़ी अच्छी हुई।
आखिरकार, मेरी मेहनत सफल हुई!

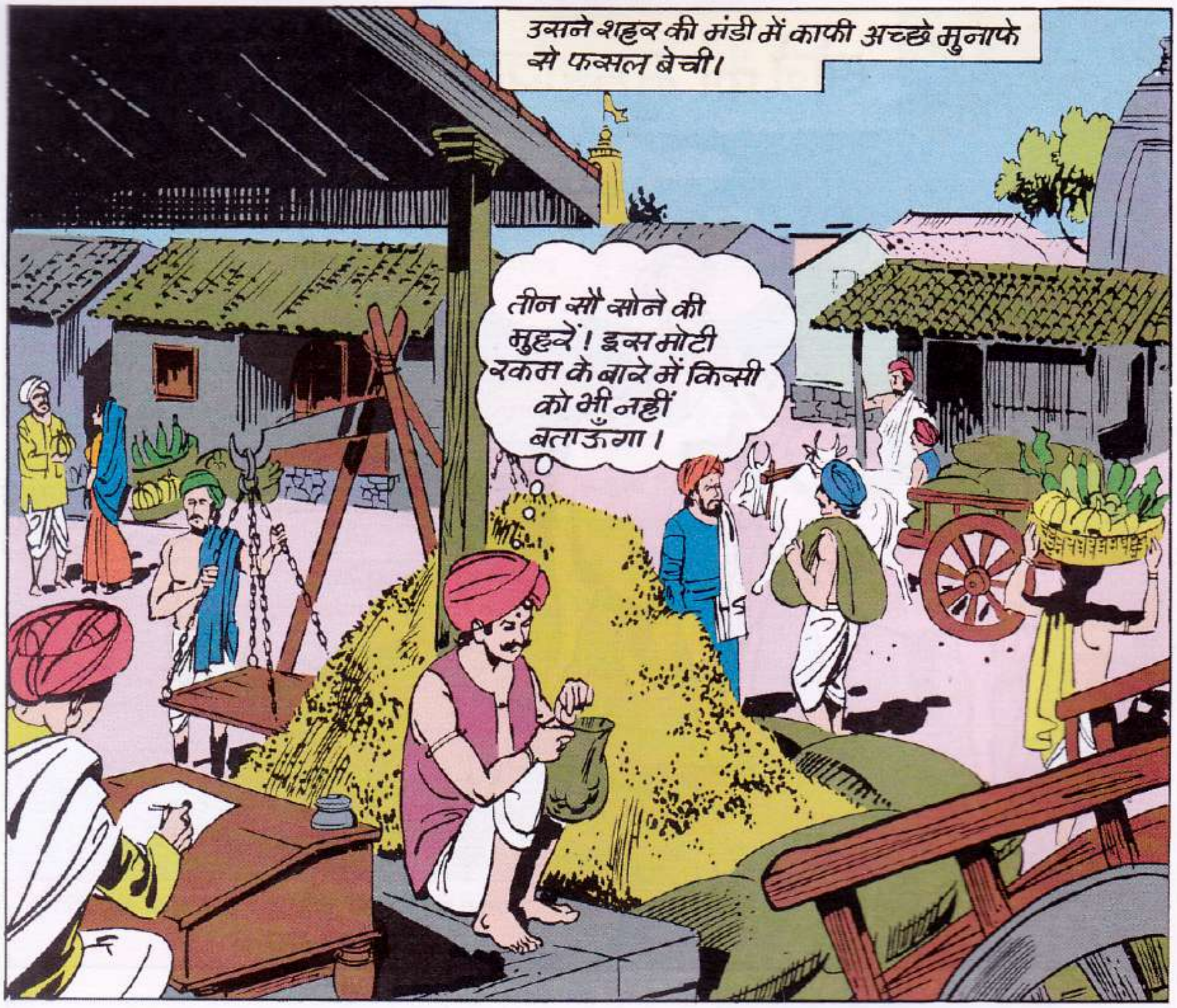
उसने शहर की मंडी में काफी अच्छे मुनाफे से फसल बेची।
तीन सौ सोने की मुहरें! इस मोटी रकम के बारे में किसी को भी नहीं बताऊँगा।

घर आकर उसने धन जमीन में गाड़ दिया।
बस, अब कोई नहीं चुरा सकता।

कुछ दिन बाद –
तीन सौ ही थे या ज्यादा? गिन कर देखूँ।

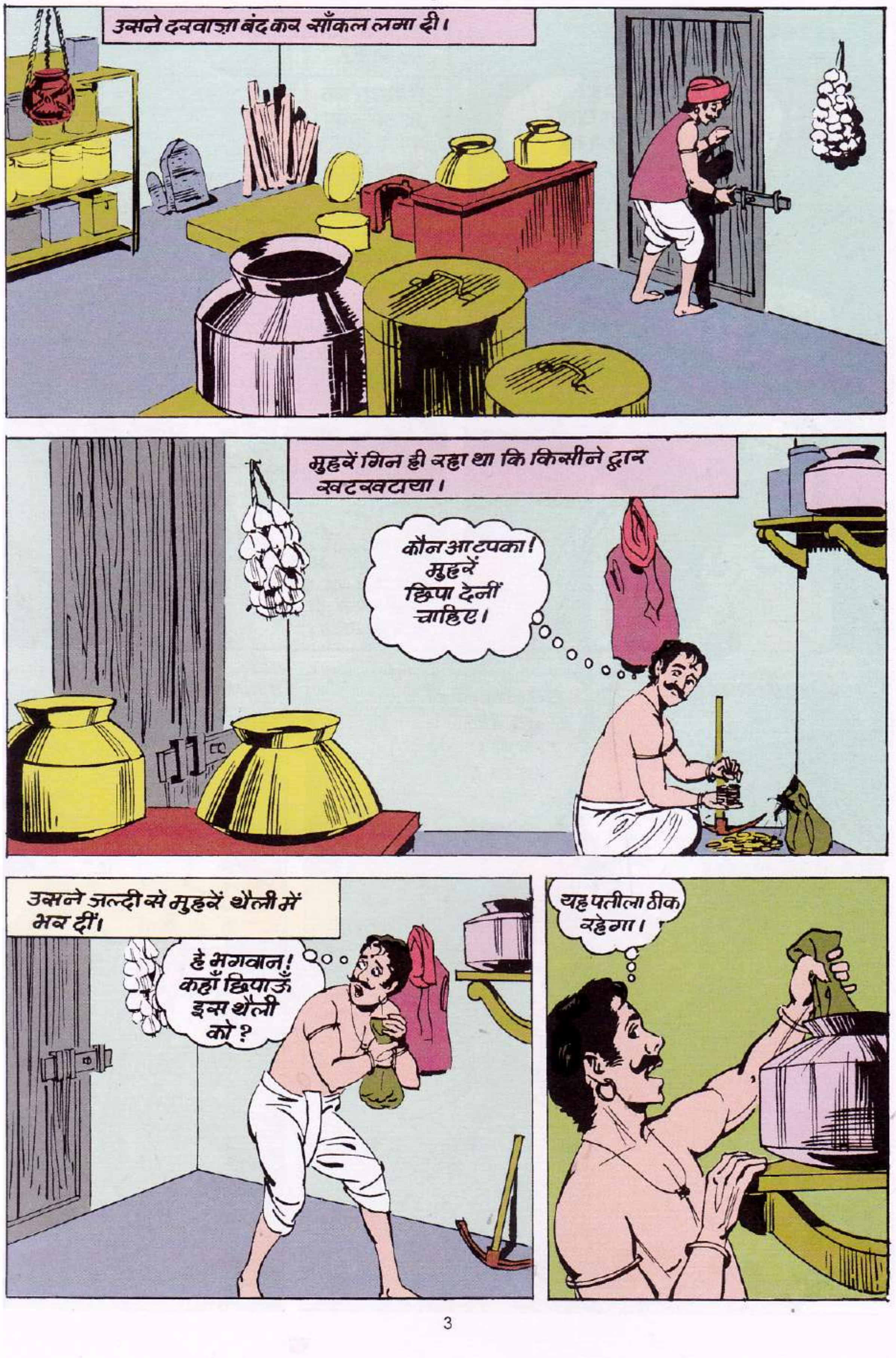
उसने दरवाज़ा बंद कर साँकल लगा दी।
मुहरें गिन ही रहा था कि किसीने द्वार खटखटाया।
कौन आ टपका! मुहरें छिपा देनी चाहिए।
उसने जल्दी से मुहरें थैली में भर दीं।
हे भगवान! कहाँ छिपाऊँ इस थैली को?
यह पतीला ठीक रहेगा।

दरवाज़े पर उसका मित्र खड़ा था।
मैं बाज़ार जा रहा था। सोचा, शायद तुम भी चलना चाहो।
हाँ, हाँ, चलो।
इतने में उसकी पत्नी भी आ गयी।
दोपहर तक आ जाऊँगा। खाना तैयार रखना।
जल्दी में वह मुहरों-वाली थैली की बात भूल ही गया।
उसकी पत्नी रसोई में आयी तो —
घर में पानी की बूँद भी नहीं। लाना होगा।
उसने एक पतीला उठाया…

... नदी जा ही रही थी कि अचानक खयाल आया।
वे लौटने पर घर सूना पायेंगे तो चिढ़ेंगे।
वाह! कसाई आ रहा है। बेचारा हमेशा मदद करता है।
भैया, थोड़ा पानी ला दोगे?
ज़रूर ला दूँगा। लाओ पतीला।
नदी की ओर जाते समय उसे पतीले में खन्‌खन् आवाज़ सुनायी दी।
क्या है पतीले में? थैली!
थैली में? सिक्के!

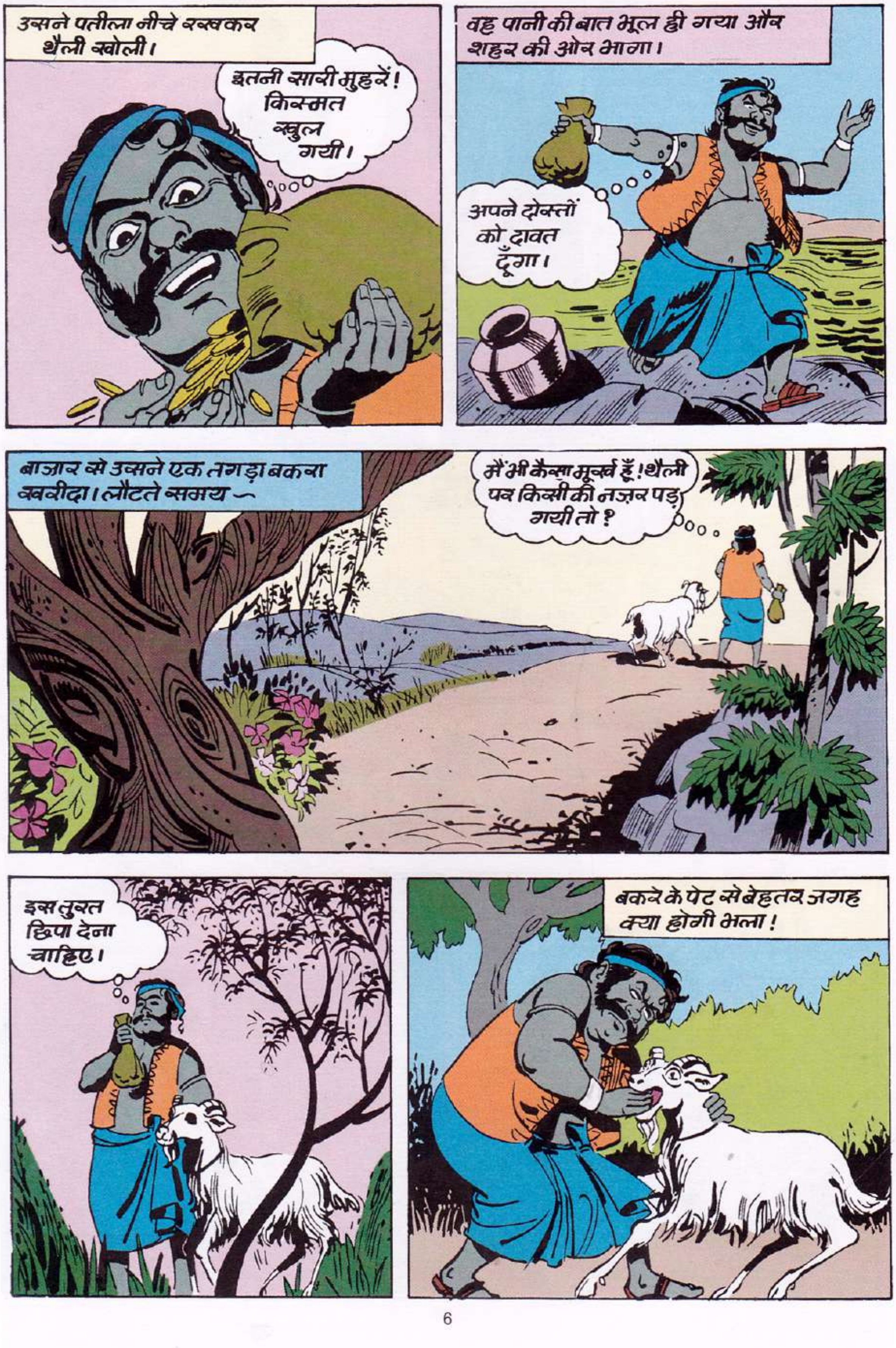
उसने पतीला नीचे रखकर थैली खोली।
इतनी सारी मुहरें! किस्मत खुल गयी।
वह पानी की बात भूल ही गया और शहर की ओर भागा।
अपने दोस्तों को दावत दूँगा।
बाज़ार से उसने एक तगड़ा बकरा खरीदा। लौटते समय –
मैं भी कैसा मूर्ख हूँ! थैली पर किसी की नज़र पड़ गयी तो?
इसे तुरत छिपा देना चाहिए।
बकरे के पेट से बेहतर जगह क्या होगी भला!

आगे जाने पर, उसे अपना बेटा मिला।
मुझे शहर में कुछ काम है। इस बकरे को घर ले जाओ।
अच्छा, बापू।
दो मुहरों में खरीदा है। संभाल कर ले जाना।
हाँ, बापू।
रास्ते में, लड़के को एक किसान और उसका मित्र मिले।
बड़ा तगड़ा बकरा है। बेचोगे?
कितना दोगे?
तीन मुहरें।
ठीक है, ले जाओ।

इस सौदे से बापू बड़ा खुश होगा ... एक मुहर का फायदा रहा।

किसान जब घर लौटा –
कैसा तगड़ा बकरा है!
हाँ, दोस्तों को दावत दूँगा। इसे पीछे आँगन में बाँध दो।

किसान घर में घुसा तो –
मेरा पतीला! कहाँ गया पतीला?

मैंने पतीला यहाँ रखा था उसका क्या किया?
कसाई को पानी लाने के लिए दिया है। अभी तक आया नहीं।

अब वह कभी आयेगा भी नहीं। पतीले में सोने की मुहरों-वाली थैली थी।
हाय, मुझे बताया क्यों नहीं था?
मेरे खून-पसीने की कमाई लुट गयी।
जी छोटा मत करो। हमारी ईमान की कमाई कोई नहीं छीन सकता।
ठीक कहती हो। चलो बकरे की बलि देकर भगवान् से न्याय की दुआ माँगें।

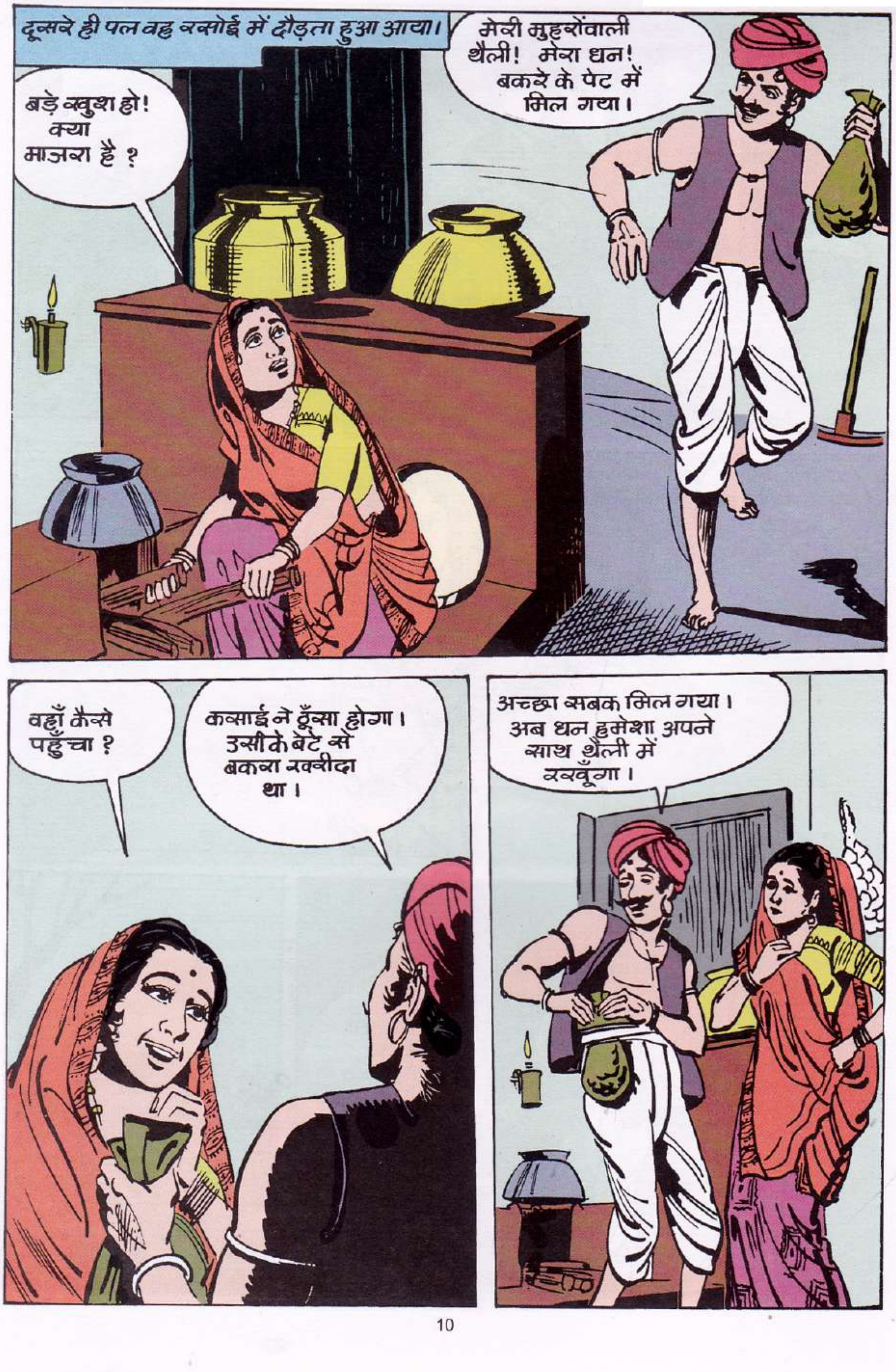
दूसरे ही पल वह रसोई में दौड़ता हुआ आया।
मेरी मुहरोंवाली थैली! मेरा धन! बकरे के पेट में मिल गया।
बड़े खुश हो! क्या माजरा है ?
वहाँ कैसे पहुँचा ?
कसाई ने ठूँसा होगा। उसी के बेटे से बकरा खरीदा था।
अच्छा सबक मिल गया। अब धन हमेशा अपने साथ थैली में रखूँगा।

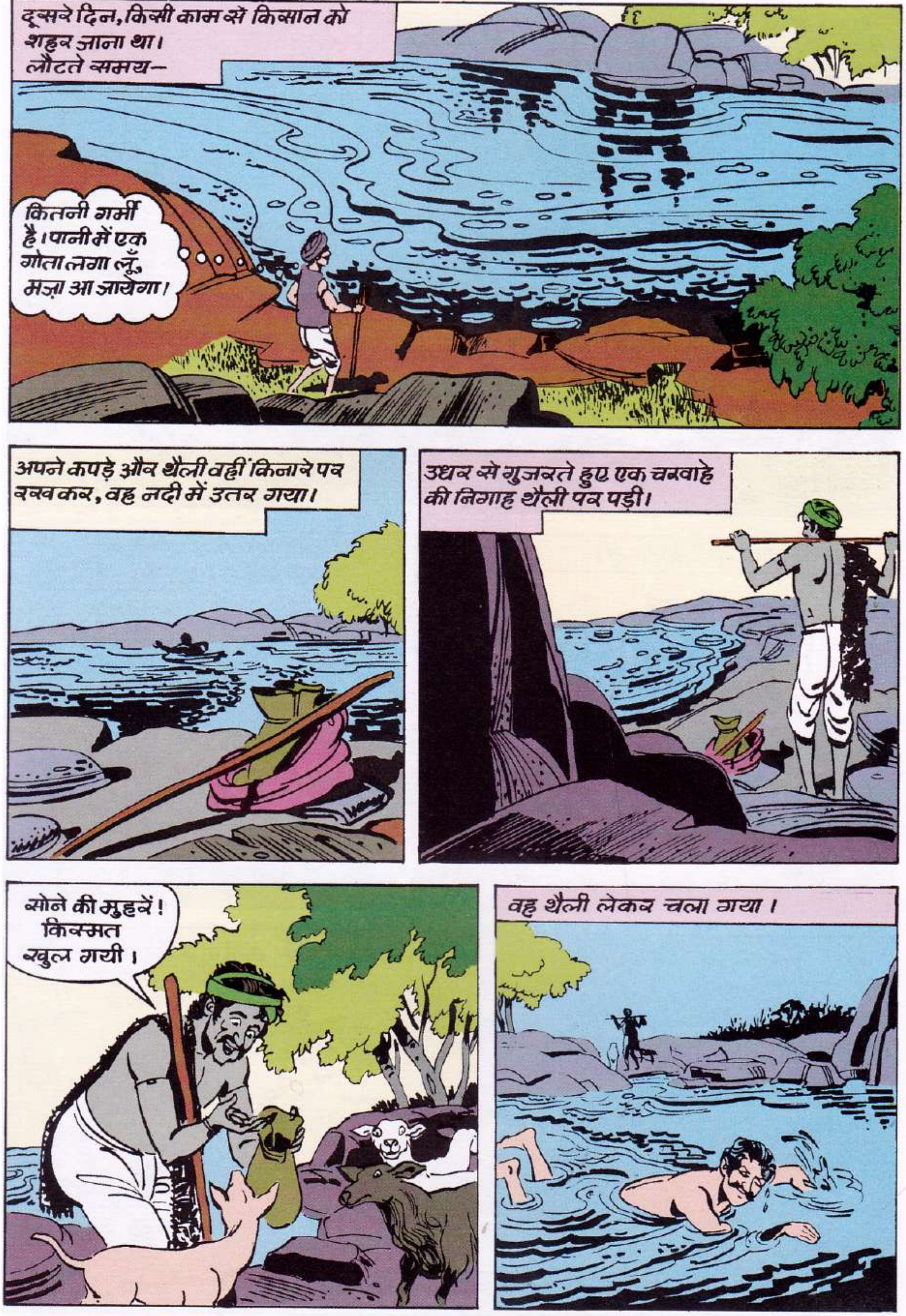

दूसरे दिन, किसी काम से किसान को शहर जाना था। लौटते समय–
कितनी गर्मी है। पानी में एक गोता लगा लूँ, मज़ा आ जायेगा।
अपने कपड़े और थैली वहीं किनारे पर रखकर, वह नदी में उतर गया।
उधर से गुजरते हुए एक चरवाहे की निगाह थैली पर पड़ी।
सोने की मुहरें! किस्मत खुल गयी।
वह थैली लेकर चला गया।

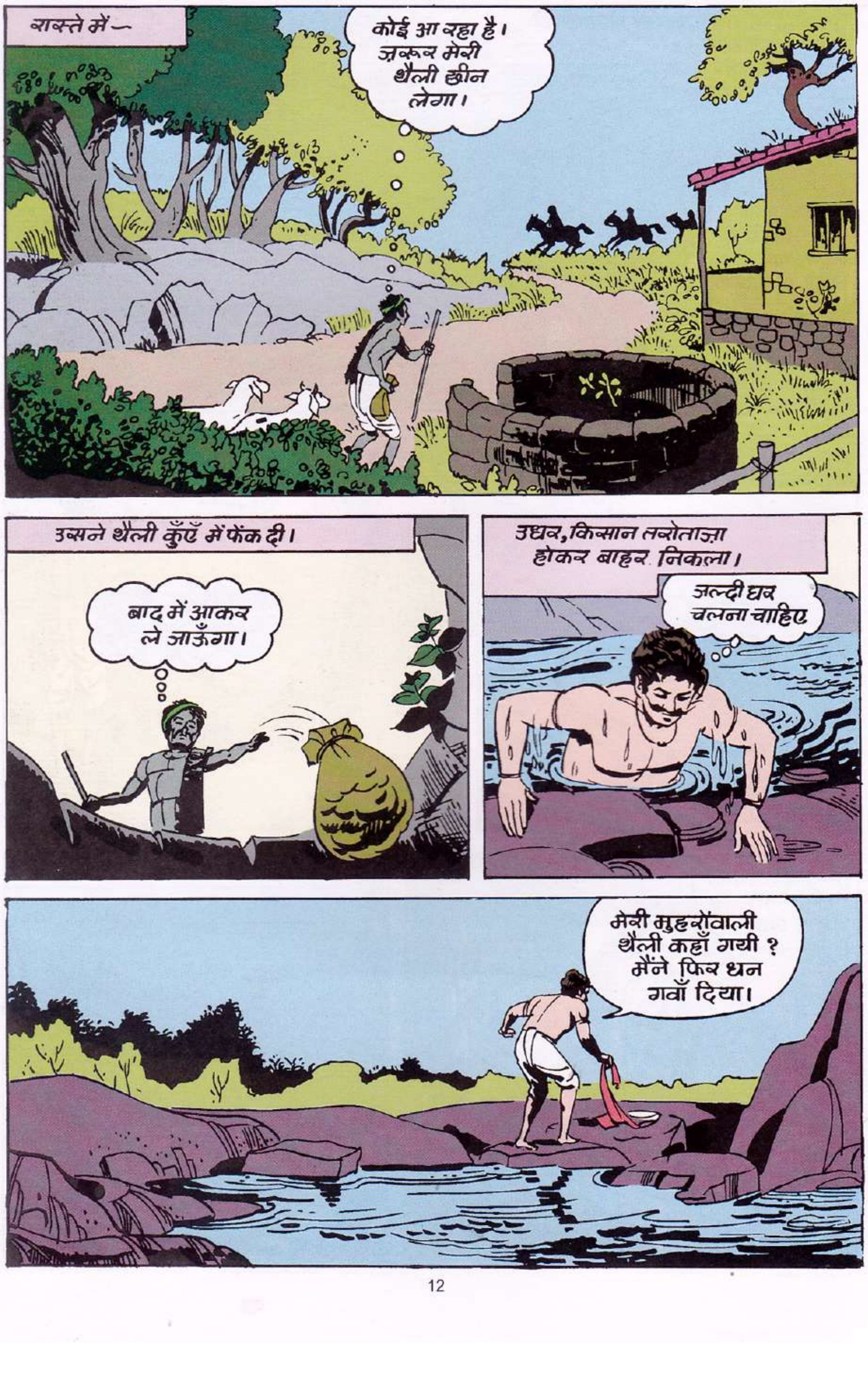
रास्ते में —
कोई आ रहा है। ज़रूर मेरी थैली छीन लेगा।
उसने थैली कुँएँ में फेंक दी।
बाद में आकर ले जाऊँगा।
उधर, किसान तरोताज़ा होकर बाहर निकला।
जल्दी घर चलना चाहिए
मेरी मुहरोंवाली थैली कहाँ गयी ? मैंने फिर धन गवाँ दिया।

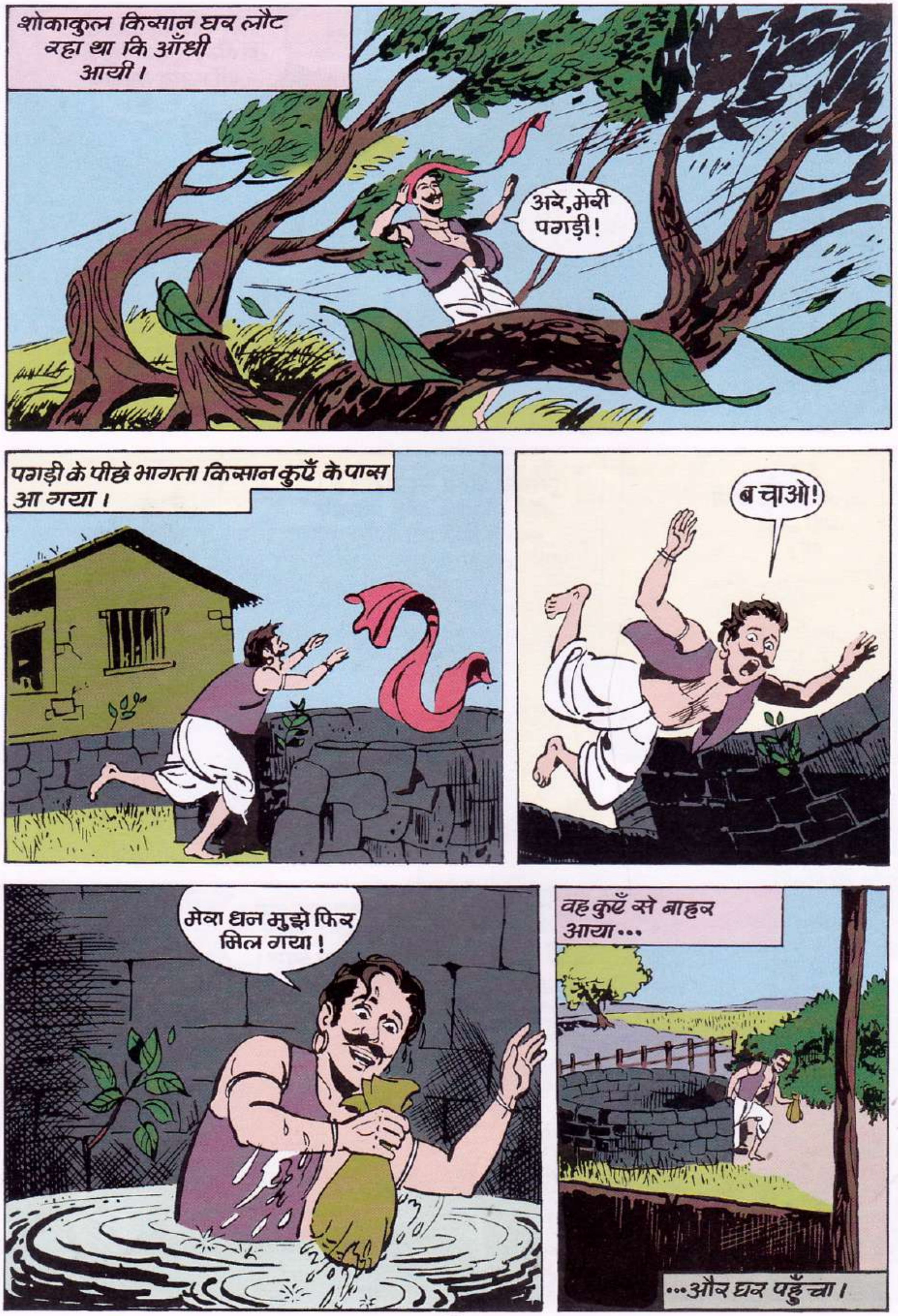
शोकाकुल किसान घर लौट रहा था कि आँधी आयी।
अरे, मेरी पगड़ी!
पगड़ी के पीछे भागता किसान कुएँ के पास आ गया।
बचाओ!
मेरा धन मुझे फिर मिल गया!
वह कुएँ से बाहर आया...
...और घर पहुँचा।

दूसरे दिन, किसान और चरवाहे की भेंट गाँव के बाज़ार में हुई।
बड़े दुःखी हो, क्या हुआ ?
मैंने सोने के सिक्कों की थैली कुएँ में छिपायी थी। अब गायब है।
मतलब, वह थैली मेरी नहीं थी।
तुम्हारी थैली सुरक्षित है। मैंने समझा नदी किनारे खोयी मेरी थैली है। आओ, तुम्हारा धन तुम्हें दे दूँ।
घर जाकर किसान ने मुहरोंवाली थैली उसे दे दी।
भगवान् करें, तुम्हारी थैली भी मिल जाय।

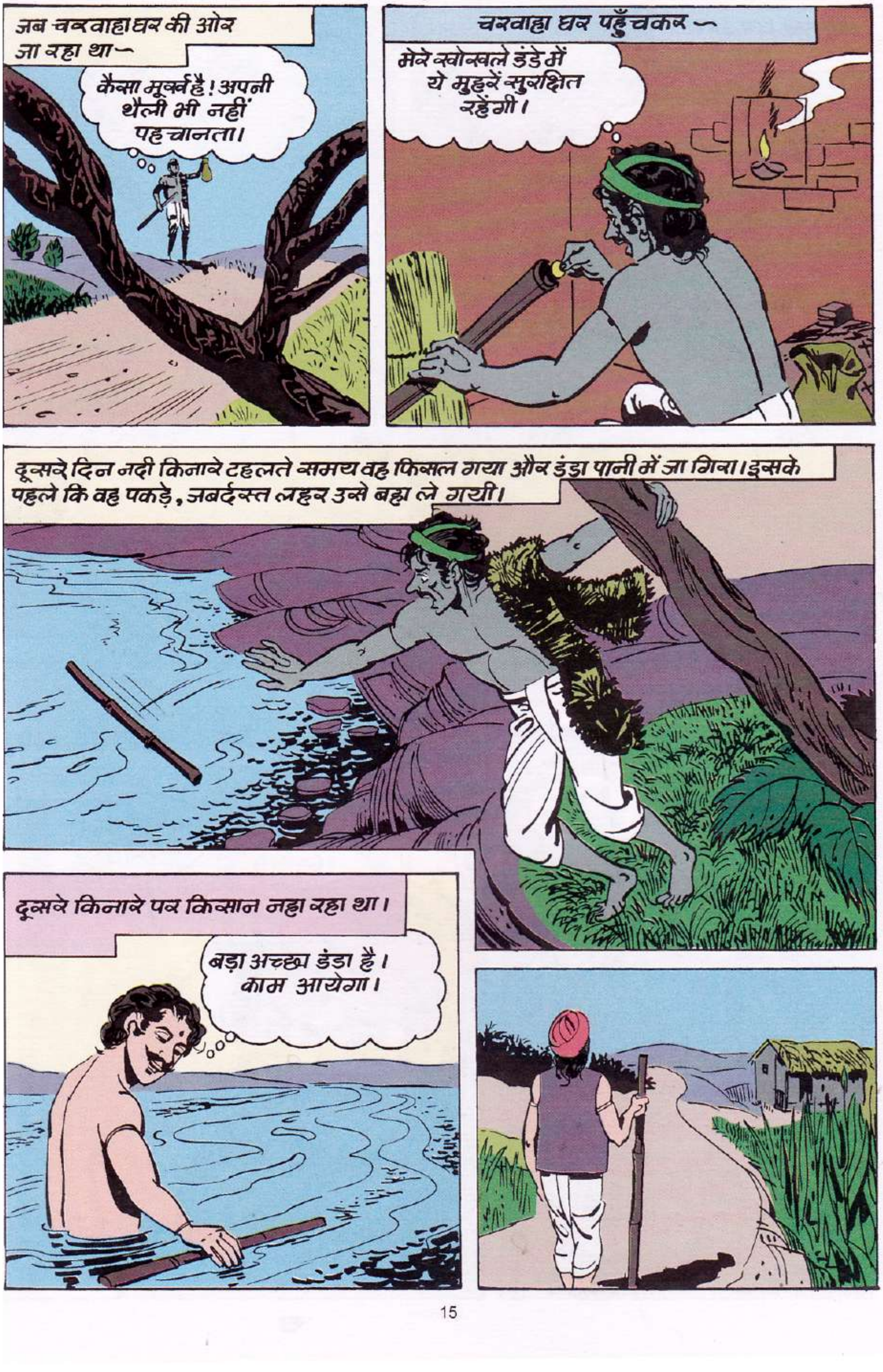
जब चरवाहा घर की ओर जा रहा था—
कैसा मूर्ख है! अपनी थैली भी नहीं पहचानता।
चरवाहा घर पहुँचकर —
मेरे खोखले डंडे में ये मुहरें सुरक्षित रहेंगी।
दूसरे दिन नदी किनारे टहलते समय वह फिसल गया और डंडा पानी में जा गिरा। इसके पहले कि वह पकड़े, जबर्दस्त लहर उसे बहा ले गयी।
दूसरे किनारे पर किसान नहा रहा था।
बड़ा अच्छा डंडा है। काम आयेगा।

वह जब घर आया ~
जलाने को लकड़ी नहीं है।
आज ही यह डंडा मिला है। काम चलाने के लिए इसे ही काट देता हूँ।
जैसे ही डंडे पर कुल्हाड़ी मारी ~
मेरी मुहरें!
मैंने तीन बार मुहरें खोयीं, तीनों बार मिल गयीं।
सब भगवान् की दया है।
शिक्षा – ईमानदारी की कमाई, कभी छिन नहीं सकती।

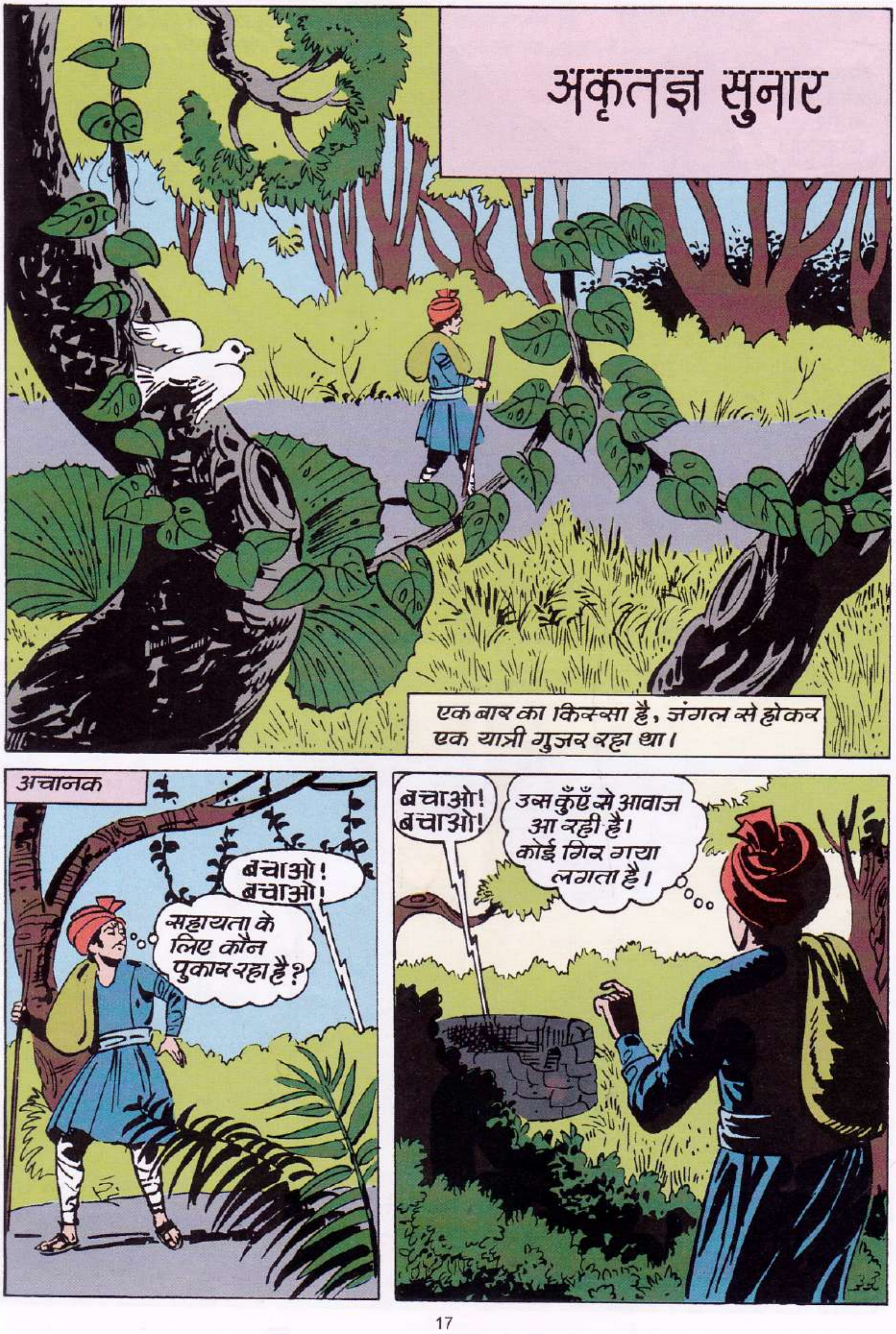
अकृतज्ञ सुनार
एक बार का किस्सा है, जंगल से होकर एक यात्री गुजर रहा था।
अचानक
बचाओ! बचाओ!
सहायता के लिए कौन पुकार रहा है?
बचाओ! बचाओ!
उस कुँएँ से आवाज आ रही है। कोई गिर गया लगता है।

भैया, दया करके हमें बाहर निकालो।
दयालु यात्री ने कुँएँ में एक लता लटकायी...
...और जानवरों को खींच लिया।

जब पहाड़ों की ओर आना हो तो जरूर मिलना। तुम्हारी मदद करके खुशी होगी।
कभी नगर की सीमा पर आओ तो मुझे मत भूलना।
जंगल में मुझे सेवा का मौका देना।
धन्यवाद, दोस्तो, तुमसे जरूर मिलने आऊँगा।
तभी ~
मुझे छोड़ दिया ? मैं अभी यहीं पड़ा हूँ।
रुको, उस दुष्ट को मत बचाना। वह भरोसे लायक नहीं है।

उसे भूखा-प्यासा कैसे मरने दूँ ? मदद करनी होगी ।
काश, तुम हमारी सलाह मान लेते ।
शीघ्र ही आदमी भी बाहर निकल आया ।
मैं सुनार हूँ । शहर में मेरे घर जरूर आना ।
एक वर्ष बाद, यात्री सोने की मुहरों से भरी थैली लेकर उधर से ही गुजर रहा था ।
अँधेरा हो गया। अब आराम कर लूँ। कल उन मित्रों को खोजूँगा।
वह सो गया। कुछ देर बाद डाकू आये।

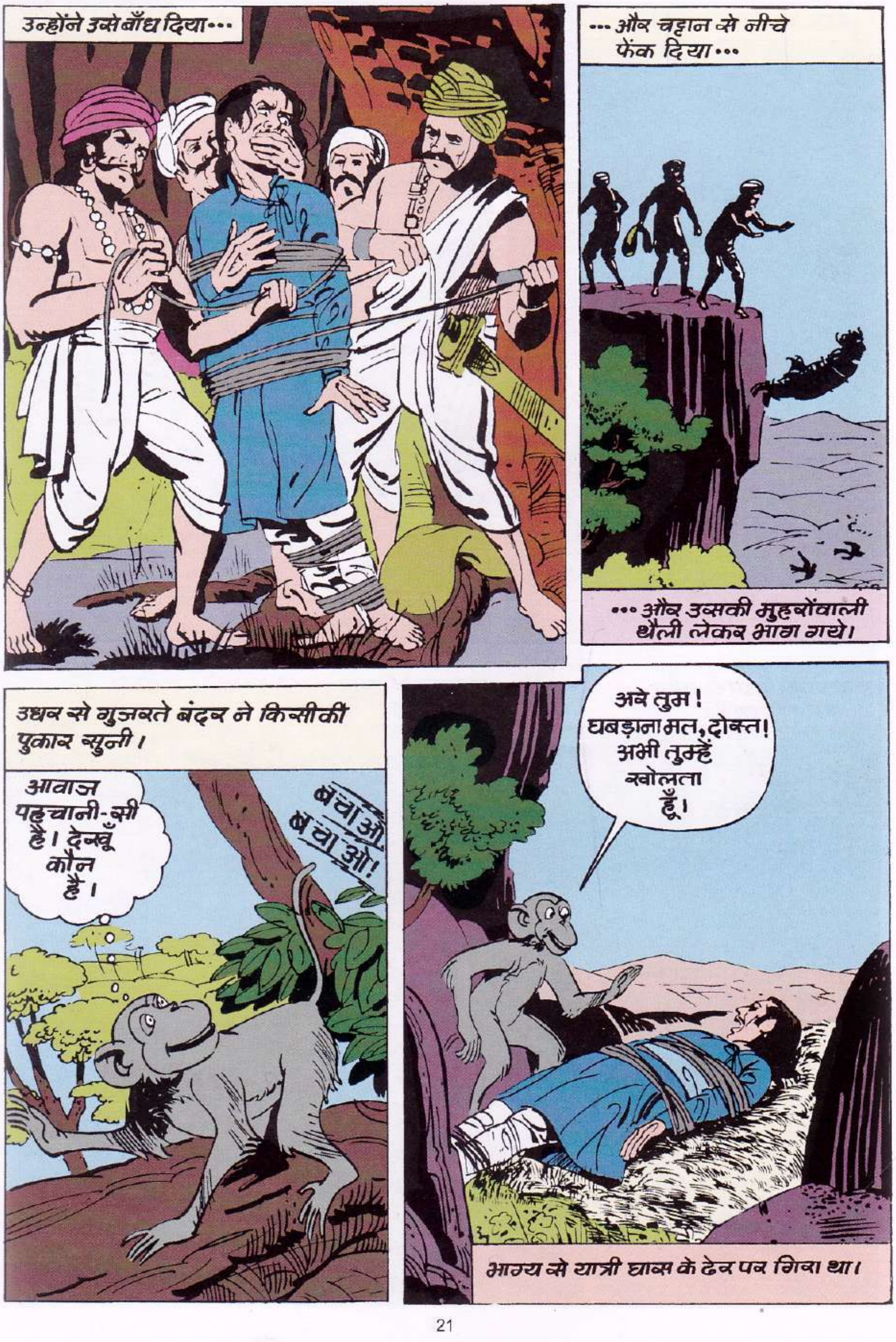

उन्होंने उसे बाँध दिया···
··· और चट्टान से नीचे फेंक दिया···
··· और उसकी मुहरोंवाली थैली लेकर भाग गये।
उधर से गुजरते बंदर ने किसीकी पुकार सुनी।
आवाज पहचानी-सी है। देखूँ कौन है।
बचाओ! बचाओ!
अरे तुम! घबड़ाना मत, दोस्त! अभी तुम्हें खोलता हूँ।
भाग्य से यात्री घास के ढेर पर गिरा था।

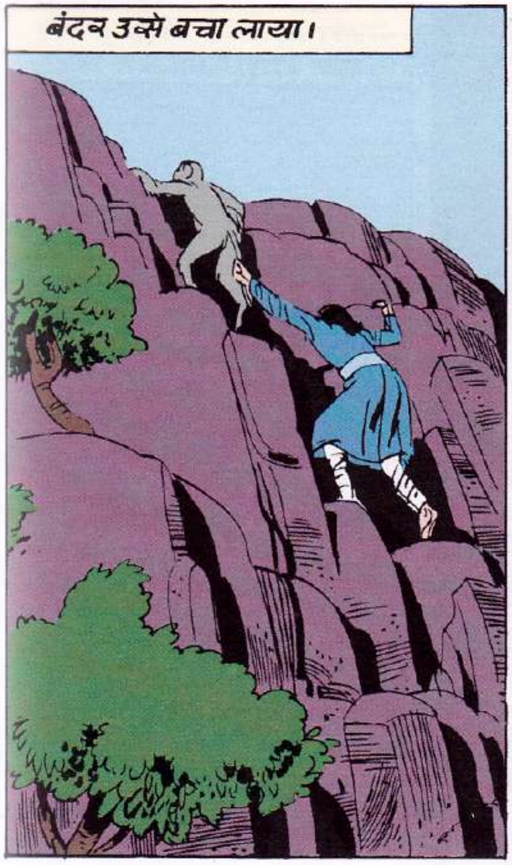
बंदर उसे बचा लाया।

पेड़ के सहारे बैठकर यात्री ने उसे सब बताया।
तुम यहीं आराम करो, मैं तुम्हारी मुहरोंवाली थैली लेकर आता हूँ।

डाकुओं को बंदर ने तुरंत खोज लिया।
वाह! सब सोये पड़े हैं!

उसने उनका सब सामान एक झाड़ी में छिपा दिया।

डाकू जब जागे –
अरे, हमारी तलवारें, हमारा सामान ?
कोई भूत ले गया होगा।
विजेता बंदर, यात्री के पास मुहरोंवाली थैली ले आया।
यह लो अपना धन।
दोस्त, कितने मेहरबान हो तुम!
अपनी मुहरोंकी थैली संभालकर यात्री आगे बढ़ा। तभी –
गर्र र्र
हे भगवान्! शेर!

डरो मत। भूल गये, मैं तो तुम्हारा मित्र हूँ।
ओहो! कुएँवाले शेर हो।
ठीक पहचाना। मेरी गुफा में चलोगे न!
गुफा में –
मेरी यह भेंट स्वीकार करो!
जंगल के राजा, कितने उदार हो तुम!
यात्री शहर की ओर जा रहा था कि –
पशुओं में कितनी सहृदयता थी, चलूँ सुनार से भी मिल लूँ।

दूसरे दिन सुबह जब वह शहर पहुँचा –
राजकुमारी की हत्या हो गयी !
किसने मारा ?
ऐसी घबड़ायी हुई भीड़ में भला मुझे सुनार का पता कौन देगा ?

भाग्य से भीड़ में सुनार भी था।
दोस्त, तुमसे अचानक फिर भेंट हो जाने की खुशी हुई। चलो घर चलें।
तुमने पहचान लिया, मज़ा आ गया।

सुनार उसे घर ले गया।
कहो क्या सेवा करूँ ?
अपने मित्र उस शेर ने मुझे एक हार दिया है। इसे अच्छे दामों में बिकवा दो।

थैली में से हार निकालते समय यात्री की कुछ मुहरें गिर पड़ीं।
काश, ये मुहरें मैं हथिया सकूँ!
मैं मदद करूँ।
सुनार ने मुहरें उठाकर यात्री को दे दीं।
यह रहा हार। यह मुहरों की थैली भी तुम्हें सौंपता हूँ। जाते समय ले लूँगा।
बेफिक्र रहो। हार भी अच्छे दामों में बिकवा दूँगा।
हार तो राजकुमारी का लगता है। शेर ने उसे मारकर इसे पाया होगा।
राजा से चुगली कर दूँ। यात्री शक में पकड़ा जायेगा। फाँसी की सज़ा होगी। राजा से इनाम पाऊँगा और यात्री की मुहरें भी हथिया लूँगा।

पता चलने पर राजा ने यात्री को गिरफ्तार करवा लिया।
तुमने राजकुमारी की हत्या की है। तुम्हें मौत की सजा दी जायेगी।
महाराज, मैं निरपराध हूँ।
इस हार ने तुम्हारा अपराध साबित कर दिया है। कल सूर्योदय के समय तुम्हें फाँसी दी जायेगी।
हे भगवान!
यात्री को रात भर जेल में रखा गया।
जानवर ठीक कहते थे। सुनार दगाबाज निकला।
धीरज धरो। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है।
तुम! मेरे दोस्त, अब क्या हो सकता है ?
मैं अभी जाकर राजमाता को डसूँगा।

मेरा ज़हर कोई नहीं उतार पायेगा। फिर तुम महल में जाना ...
... और इस जड़ी से उसे बचाना। राजा माफ कर देगा।
जड़ी देकर साँप चला गया।
थोड़ी देर बाद, महल में —
मुझे साँप डँस गया! कोई बचाओ।
बड़े से बड़े वैद्य-हकीम आये।
महाराज, क्षमा करें, अच्छी से अच्छी दवाएँ बेअसर साबित हो रही हैं।

हाय, क्या मेरी माँ को कोई नहीं बचा सकता ?
बचा सकता है – वह निरपराध कैदी ! जिसे तुम अपनी बेटी का हत्यारा समझ बैठे हो।
जरूर कोई अलौकिक संदेश है। कैदी को तुरंत बुलाओ।
कैदी को हाजिर किया गया।
मेरी माँ को बचा लो। भारी इनाम दूँगा।
महाराज, पहले मेरी आप-बीती सुन लें, तब दवा दूँगा।

यात्री ने बात पूरी की —
हो सकता है राजकुमारी को शेर खा गया हो। लालची सुनार मुझे झूठ बोल कर फँसा रहा है।
वह भुगतेगा। तुम कृपा करके मेरी माँ का इलाज करो।
यात्री ने जड़ी पीसकर दूध में मिलायी...
...और राजमाता को पिला दी।
कैसी हो, माँ ?
अच्छी हूँ, बेटा। मुझे बचाने-वाले को भरपूर इनाम देना।

राजा ने यात्री से कहा।
कृपया, यह मुहरों की थैली स्वीकार करो।
धन्यवाद, महाराज!
सुबह हो चुकी थी। फाँसीघर के सामने सुनार प्रतीक्षा में खड़ा था।
अभी तक यात्री लाया नहीं गया। फाँसी लग जाय फिर बस ...
उसी समय राजा के सिपाहियों ने आकर उसे पकड़ लिया।
असली अपराधी तुम हो। राजा के हुक्म से अब तुम्हें फाँसी दी जायेगी।
शिक्षा– जो जैसा बोयेगा, वैसा काटेगा।

हास-परिहास और
दंतकथाएँ

सोने की मुहरोंवाली थैली

खुरासन के सुल्तान हुसेन मिर्जा (१४६९ -१५०६ ई.) के समय में फारसी के विद्वान हुसेन अली वायज ने पंचतंत्र का फारसी अनुवाद किया, जिसका नाम था अन्वर-ए-सुहैली। वायज ने पात्रों के नाम बदल दिये ताकि रचना फारसी की लगे। ये दो किस्से उसी अन्वर-ए-सुहैली से लिये गये हैं। मूल किस्से में गाय को मारने का उल्लेख है। हमारे इस रूपांतर में हमने गाय के स्थान पर बकरी शब्द लिखा है। अकबर और जहाँगीर के दरबार के प्रख्यात चित्रकारों ने अन्वर-ए-सुहैली की कहानियों पर कई बार चित्र बनाये। इस पुरानी पांडुलिपियो में जितनी खूबसूरत लिखावट है, उतने ही खूबसूरत चित्र हैं। अन्वर-ए-सुहैली की तीन पांडुलिपियाँ उपलब्ध हैं। एक लंदन संग्रहालय में है और दो भारत में। उसमें से एक प्रिंस आफ वेल्स संग्रहालय बम्बई में, और दूसरी काशी में है।

अमर चित्र कथा के अन्य हास-परिहास और दंतकथाएँ :

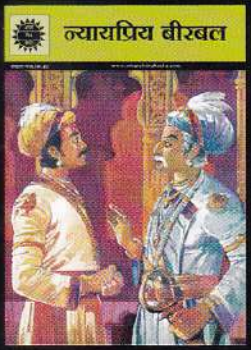

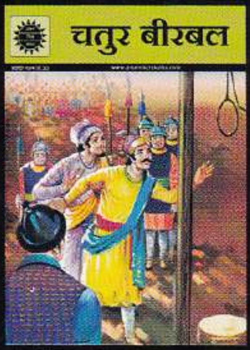

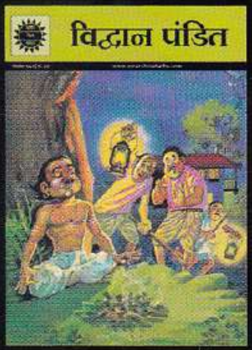

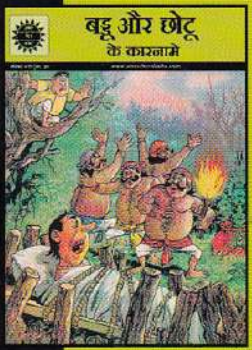

ये भी पढ़ें :

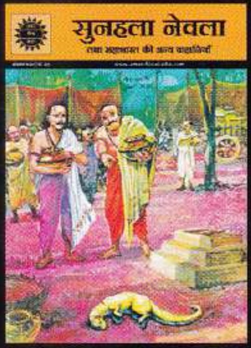

महाकाव्य और
पौराणिक कथाएँ

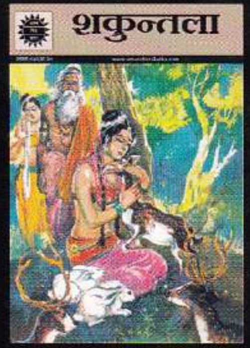

भारतीय उत्कृष्ट साहित्य

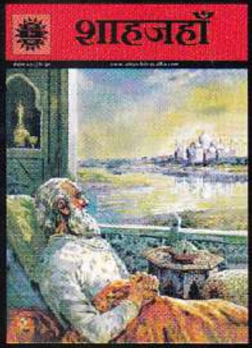

वीरांगना

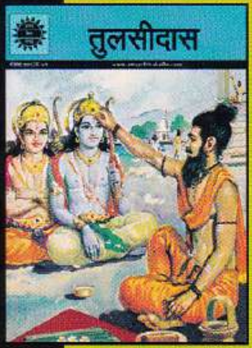

दिव्यदृष्टा

www.amarchitrakatha.com
ISBN 978-81-8482-366-0